माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

2009

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेण्ड्री परीक्षा 10+

केन्द्र क्रमांक की सील

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :–

क :– संख्या शब्दों में 1 अंकों में

ख :– परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 8 में है।

ग :– उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम

पता / संस्था

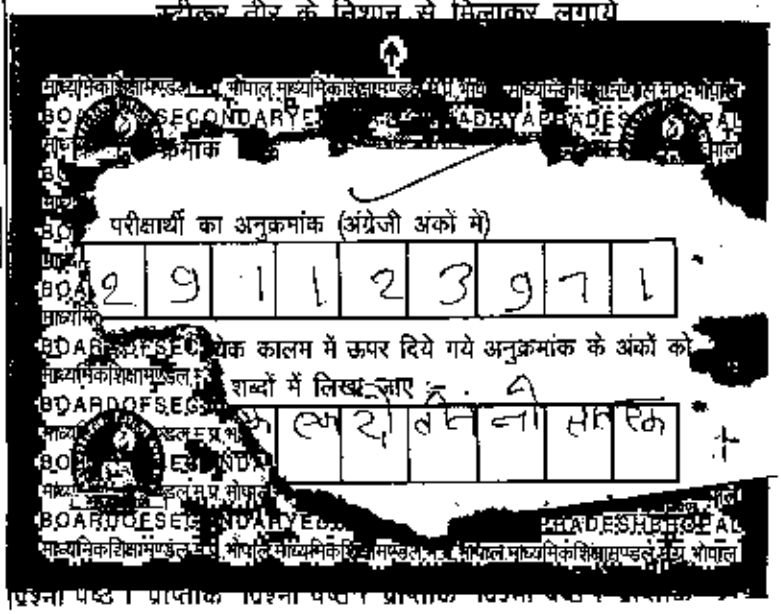

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12/3/09

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
	A

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	1	1	2	3	9	7	1

प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को शब्दों में लिखा जाए :–

B S E M P

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 2760550 दिनांक........ दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोडें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास' किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

(3)

प्र०-1 रिक्त स्थान —

(i) कृष्ण को मथुरा ले जाने के लिये अक्रूर आया था

(ii) 'रामचन्द्रिका' के रचयिता केशवदास हैं।

(iii) श्री कृष्ण के प्रति मीरा का दाम्पत्य भाव है।

(iv) प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना सन् 1940 में हुई।

(v) 'सूर्य का स्वागत' भवानी प्रसाद मिश्र की रचना है।

प्र०-2 सही विकल्प —

(i) फिर वसन्त आया महादेवी वर्मा का कहानी संग्रह है।

(ii) भय जब स्वभावगत हो जाता है तो कायरता कहलाता है

B S E M P

(iii) ~~श्री कृष्ण के प्रति~~

(iii) काव्य में सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग कबीर ने किया।

(iv) छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।

(v) शोषण का विरोध प्रगतिवाद काव्य की प्रमुख विशेषता है।

प्र-3 सत्य / असत्य

(i) कबीर प्रेमाश्रयी शाखा के कवि हैं (असत्य)

(ii) भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है (सत्य)

E M P

मध्यप्रदेश

(iii) शृंगार रस का स्थाई भाव हास होता है (असत्य)

(iv) एकांकी दृश्य काव्य का रूप होता है (सत्य)

(v) शरद जोशी प्रसिद्ध व्यंग्यकार है (सत्य)

उ०–4 सही जोड़ी –

(i) काव्य में सर्वाधिक छंदों का प्रयोग किया है — घनानन्द

(ii) काव्य में भाव-विह्वलता कूट-कूट कर भरी है — मीरा ने

(iii) राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने वाले कवि है — गोपाल सिंह नेपाली

(iv) रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि है — केशव ने

B
S
E
M
P

(4) 'शुक्र प्रशंसा' नामक कविता के रचयिता है - जगन्नाथ दास रत्नाकर

प्र=5 एक वाक्य मे -

(iv) नाथ्यो देवे।

(v) डाक।

(i) सूरदास।

(iii) देहा।

(ii) साधारण वाक्य।

प्र=6 कबीर ने शब्द की महिमा को संसार मे विशिष्ट स्थान दिया है। कबीर ने कहा है कि मनुष्य को अपने मुख से

B
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

अंक
मध्यप्रदेश

सावधानीसे शब्द निकालना चाहिये क्यों कि शब्द के हाथ पैर नहीं होती है। एक शब्द तो मधुरता ~~लिये होता है~~। दूसरा शब्द कठोरता लिये होता है जो श्रोता के हृदय मे घाव कर देता है। मधुरता का शब्द औषधि का कार्य करता है।

उ०-7 'विभावरी' के बीतने पर 'उषा नागरि' पनघट रूपी आकाश मे 'तारे रूपी घड़ो' को डुबो रही है।

उ०-8 छायावाद की विशेषताऐं →

छायावाद की विशेषताये निम्न है —

(1) स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह।
(2) प्रकृति का मानवीयकरण।
(3) व्यक्तिवाद की प्रधानता।

B
S
E
M
P

26

पृष्ठ के अंकों का योग

(4) प्रकृति प्रेम
(5) करुणा और वेदना की अभिव्यंजना
(6) प्रेम और सौन्दर्य का प्रारम्भ

उ0=10
ताप पिघलने का अर्थ है — 'विरह जन्य दुखों का कम होना'
हिमालय की छाँह में रहकर भी यशोधरा का ताप इसलिये नहीं पिघलता है। क्योंकि कृष्ण ने तो अपने मित्र उद्धव को गोपियों के यहाँ पहुँचा दिया संदेश के लिये। और उनकी विरह गाथा को सुना। लेकिन गौतम तो अकेले थे। यशोधरा। कैसे अपना संदेश पहुँचाये। यशोधरा यदि पवन, बादल आदि को दूत बनाकर पहुँचा देती है। तो भी उसे सुनने में समर्थ नहीं

है। इसलिये हिमालय की छाँह मे रहकर भी यशोधरा का ताप पिघलता नहीं है।

उ०—11 उत्तराखण्ड के चारो धाम चार पवित्र नदियों के किनारे स्थित है।

(1) यमुनोत्री नदी का किनारा मार्ग यमुना नदी के किनारे है
(2) गंगोत्री नदी का किनारा मार्ग गंगा नदी के किनारे है
(3) केदारनाथ का मार्ग मंदाकिनी नदी के किनारे है
(4) बद्रीनाथ का मार्ग अलकनन्दा नदी के किनारे है

B
S
E
M
P

उ०—12 अद्भुत रस ⟹

जब सहृदय के हृदय मे 'आश्चर्य' स्थायी भाव का विभाव, अनुभाव, संचारी भाव से संयोग होता

योग पूर्व पृष्ठ

है जो अद्भुत रस का
रूप धारण कर लेता है।

उदा० —
बिनु पग चले सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करे बिधि नाना॥

उ०-12
(i) ~~कुल – बोलना~~ →
~~वाक्य प्रयोग~~ →

कृपया ये उत्तर गलत हो गया है इसके अतिरिक्त किया है

(ii) ~~कुल्हाड़ी का बीज~~ →
~~वाक्य प्रयोग~~ →

उ०-13
(क) मिश्रित वाक्य →
जो अच्छे
विद्यार्थी होते हैं। वे परिश्रमी
होते हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(ख) वह दरिद्र है किन्तु ईमानदार है
(संयुक्त वाक्य में)

(ख) भाव पल्लवन →

"धर्म पार्थक्य का नहीं एकता का द्योतक है"
इस कथन सही है।

इस विशाल संसार में अनेक धर्म हैं सभी व्यक्ति अपने पर विश्वास रख के अपने धर्म का पालन करते हैं। धर्म पार्थक्य का नहीं एकता का द्योतक है। धर्म उस ईश्वर को पाने का एक मात्र मार्ग है जो सर्व व्याप्त है, सबका पालन हार है। क्यों कि मजब नहीं सिखाता है। आपस मे बैर रखना। धर्म तोड़ता नहीं अपितु जोड़ता है। इसलिये धर्म पार्थक्य का नहीं एकता का द्योतक है।

BSEMP

BSEMP

उ०-14 रघुवीर सिंह जीवन परिचय

(क) दो रचनाऐं →
(1) पूर्व मध्य कालीन भारत
(2) मालवा मे युगान्तर।

(ख) भाषा शैली →
डॉ रघुवीर सिंह की भाषा प्रौढ़ साहित्यिक खड़ी बोली है। इनकी भाषा संस्कृत निष्ठ शब्दावली से युक्त है। इनकी भाषाओं मे उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। मुहावरो व लोकोक्तियों का प्रयोग किया है।
रघुवीर की शैली भावात्मक शैली, विचारात्मक शैली, भेतव्यकि शैली चित्रात्मक शैली है।

(ग) साहित्य मे स्थान →
डा रघुवी

पृष्ठ के अंकों का योग

सिंह जी के निबन्धों का वर्णन भाव निरूपण की दृष्टि से अमूल्य समझा जाता है।

उ० 15 कबीरदास जीवन परिचय –

(क) दो रचनाएँ → (1) साखी। (2) रमैनी।

(ख) भावपक्ष → निर्गुण ब्रह्म के उपासक है। इसे वे राम नाम से पुकारते हैं। समाजिक बुराइयों का खण्डन किया। आदर्श जीवन के लिये उपदेश दिये। आत्मा परमात्मा के मिलन का श्रृंगार ही शान्त रस बन गया है।

कलापक्ष → कबीर दास जी की भाषा अपरिष्कृत है।

BSEMP

इनकी भाषाओ मे अरबी, फारसी, पजाबी जैसे शब्दो का प्रयोग हुआ है। इनकी भाषा को पंचमेल खिचड़ी या सधुक्कड़ी कहते है। इन्होने सरल और सरस शैली मे उपदेश दिये।

(ग) साहित्य मे स्थान →

कबीर दास जी युग निर्माता व समाज सुधारक के रूप मे स्मरण किये जाऐंगे।

उत्तर-16 संकेत →

मानव के - - - - संकुचा गये।

संदर्भ →

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक बाल भारती के

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

'यशोधरा' नामक पृष्ठ से लिया गया है। इसके लेखक 'डा. रघुवीर सिंह' हैं।

प्रसंग →

इन पंक्तियों में गौतम व यशोधरा का इन दोनों में से सबसे ज्यादा त्याग किसका है। उनका वर्णन किया गया है।

व्याख्या →

गौतम बुद्ध मानव के चिर-सुख का अमृत प्राप्त करने के लिये घर को छोड़कर चले गये। तो यशोधरा के हिस्से में चिर-वियोग का हलाहल ही आया। तो यशोधरा उसे पीकर भी नील कण्ठ नहीं हुई। जब समुद्र मन्थन से अमृत और विष दोनों निकले थे। तो शिव जी भगवान ने देवताओं की भलाई के लिये उस विष का पान किया और

16

32	+	4	=	56
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 16 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

वे नील कण्ठ कहलाये।
तो यशोधरा का त्याग
गौतम के त्याग से ज्यादा
था। इसलिये गौतम
को यशोधरा के सामने
झुकना ही पड़ा।

BSEMP

3→17 संकेत →

फुर-फुर - - - -
पानी बरसा री।

संदर्भ →

प्रस्तुत पद्यांश
हमारी पाठ्य पुस्तक भाषा
भारती के 'मंगल वर्षा'
नामक पाठ से लिया गया
है। इसके रचयिता
'भवानी प्रसाद मिश्र' है

प्रसंग →

प्रस्तुत पंक्तियों
मे पानी के बरसने से
प्रकृति मे कैसी - कैसी

पृष्ठ के अंकों का योग

(17) 56 + 04 = 60
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 17 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

चेतना आती है उसे प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या →

पानी के बरसने से बालो पर जो बूंदे गिरी है। वह ऐसी प्रतीत होती है मानो बालो पर मोती छा गये हो। पानी के बरसने से किसानो की पत्नियाँ खेत के बीच मे खड़ी कजरी नामक गीत गाने लगती है। झरने झर रहे है। जिनसे हमारा मन प्रसन्न हो रहा है। और लोग सोचते है ना जाने हमने किस जन्म मे पुण्य के कार्य किये जो इतने सुहावने दिन आये है। सुहागिन स्त्रियाँ अपने पति से कहती है। आज बड़ी प्रसन्नता है। पानी के बरसने से धरती पर प्यार के अंकुर फूटने लगे है।

BSEMP

पृष्ठ क्र.

उ०-28 पालक या मैला

(ख) भावार्थ →

सबसे अच्छी कविता की पहचान है। पढ़ने वाले मनुष्य के हृदय में यानि पाठक, सुनने वाले मनुष्य के हृदय में यानि श्रोता। कवि के भाव विचारों में लीन हो जाता है। कवि के हृदय में जो भाव होते है वे पाठक व श्रोता के हृदय के भाव बन जाते है। जिस कवि मे अपने हृदय के भाव को जैसे रूप मे पढ़ने वाले के व सुनने वाले के हृदय में पहुँचाने की जितनी अधिक प्रतिभा होती है। उसकी कविता उतनी ही अधिक प्रभावशाली तथा रसो मे मग्न होती है। ऐसे ही

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

कवियों की कविता का सदैव आदर होता है।

(घ) जिस कवि में अपने हृदय के भाव को यथार्थ रूप में पाठक या श्रोता के हृदय में पहुँचाने की जितनी अधिक प्रतिभा होती है, उसकी कविता उतनी ही प्रभाव तथा स्मरण करने वाली होती है। ऐसे ही कवियों की कविता का सदैव आदर होता है।

30-19

सचिव माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्य प्रदेश, भोपाल

विषय → अंक - सूची की द्वितीय प्रति भेजने हेतु आवेदन पत्र।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

महोदय,

सविनय नम्र
निवेदन है कि मेरी
हाईस्कूल के अंक सूची
गुम हो गई है। हाईस्कूल
की परीक्षा मैंने 2007
में उत्तीर्ण की। मुझे
अंक-सूची की द्वितीय
प्रति भेजने का कष्ट
करें। इसके लिये
निर्धारित शुल्क 20 रु.
बैंक ड्राफ्ट नम्बर 32701
8 आपके नाम से भेज
रही हूँ। मुझसे सम्बन्धित
जानकारी इस प्रकार है -
छात्रा का नाम - कल्पना
सिकरवार
पिता का नाम - श्री महेन्द्र
सिंह सिकरवार
पता - शास्त्री मार्ग
बैनारस जिला
मुरैना मध्य प्रदेश।

दिनांक
16/3/09

रोल नं.
2911239 71

पृष्ठ के अंकों का योग

उ०—20

रूप रेखा →

(1) प्रस्तावना।

(2) वैदिक काल।

(3) प्राचीन काल की नारी।

(4) पतन का युग।

(5) वीरांगना।

(6) पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव

(7) वर्तमान स्वरूप

(8) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना →

जिस प्रकार तार के बिना वीणा धूरि के बिना रथ का पहिया बेकार होता है। ठीक उसी प्रकार नारी के बिना मनुष्य का जीवन बेकार होता है। इस बात को तो ऋषि मुनियों ने पहले से ही जान लिया। मनु पुत्र ने यह घोषणा की जहा नारियों की पूजा होती है वहा देवता

BSEMP

निवास करते हैं स्त्रियों की महानता को बढ़ाया।

(2) वैदिक काल →

वैदिक काल में नारियों को तथा कन्याओं को पुरुषों की बराबर अधिकार प्राप्त थे। उनकी शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबन्ध था।

(3) प्राचीन काल की नारी →

प्राचीन काल की नारी के लिये कोई भी क्षेत्र वर्जित नहीं था। वह युद्ध क्षेत्र में अपना जौहर दिखाया करती थी। दुर्भाग्य से नारी की स्थिति में धीरे - धीरे परिवर्तन होने लगा।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ

(य) पतन का युग →

मुस्लिम युग में नारी के सम्मान को विशेष धक्का लगा। उन्हें भोग विलास की सामग्री तथा पर्दे में रखा जाने लगा। इससे स्वतन्त्रता के अधिकार छीन लिये गये शिक्षा - दीक्षा का कोई अधिकार प्राप्त नहीं था।

(र) वीरांगना →

मुस्लिम काल में अहिल्याबाई, दुर्गावती पद्मिनी, मीराबाई जैसी वीर नारियों ने मनुष्य की तथा भारतीय नारियों के गौरव को आगे बढ़ाया। सन 1857 में रानी लक्ष्मी झांसी की थी। उन्हें कौन भूल सकता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(6) पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव ⟶ भारतीय नारी पश्चिमी सभ्यता के रंग मे डूबती जा रही है तथा एक तितली बन रही है। वह अपने परिवार व समाज के प्रति कर्तव्यों से दूर होती जा रही है। जिससे परिवार का वह समाज का विघटन हो जाता है। और अशान्ति स्थापित हो जाती है। तथा शांति गायब हो जाती है। नारी जागरण के नाम पर वह दूर सी होती जा रही है। वह अपने परिवार व समाज के प्रति पूरी तरह निष्ठावान नही है।

(7) वर्तमान स्वरूप ⟹ आर्थिक दृष्टि से मुक्त हो, पुरुष की दस्ता से मुक्त हो,

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये

1. केन्द्र की सील — हायर सेकेण्ड्री परीक्षा 10+2
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक — केन्द्र क्रमांक 112217
6. परीक्षा का नाम — हायर सेकेण्ड्री
7. विषय — हिन्दी — 8. माध्यम — हिन्दी
8. दिनांक — 12-3-2009

पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

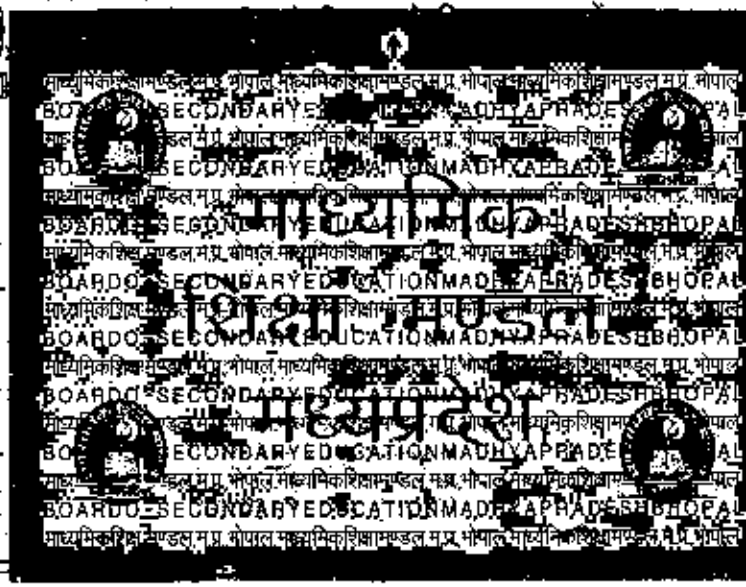

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

BSEMP

शिक्षित हो ये अच्छी बात है। लेकिन स्वतन्त्रता के अर्थ न तो पुरुष के लिये और न ही स्त्री के लिये अच्छी है। दोनों को एक दूसरे का सम्मान करते हुये परिवार व समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

(6)

उपसंहार →

आज विश्व युद्धों से भयभीत है। सर्वत्र अशान्ति है। ऐसी विषम परिस्थितियों

पृष्ठ के अंकों का योग

(2)

BSEMP

मे नारी के उन गुणो का समावेश होना जरूरी है जो उसे परम्पराओ से प्राप्त हुई। नारी सभी का सुख चाहती है वहो किसी का विनाश नही चाहती है। वहा सती भी है यानओ का विनाश करती है।

आज नारी अपने गुणों के कारण ही आगे बढती ही जा रही है। तथा गुणों के कारण ही वह पुरुषो से कन्धे से कन्धा मिलाये हर क्षेत्र मे कार्य कर रही है।

उ० = 9 हिन्दी मे नाटक सम्राट 'प्रेमचन्द' को कहते है नाटको के नाम → (1) गोदान

(2) पुरस्कार

(3)

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

4

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग